अमेरिकन मरीन फौज का अधिकारी -रिचर्ड मैकिनी

जिन पर हाल ही में बनी डॉक्युमेंट्री चर्चा में है

मुसलमानों से नफरत में मस्जिद में गया बम ब्लास्ट करने, फिर क्या हुआ कि खुद ही कबूल लिया इस्लाम

मस्जिद में ब्लास्ट करने जा रहे एक अमेरिकी शख्स के साथ ऐसा क्या हुआ, जो वह मुसलमान बन गया. यह कहानी यूएस मरीन फौज के एक पूर्व सैनिक की है. ब्लास्ट से पहले सबकुछ प्लान के अनुसार ही था और अमेरिकी शख्स नफरत की आग में मुसलमानों को जला देना चाहता था.

अमेरिकन मरीन फौज का अधिकारी

- रिचर्ड मैकिनी

किसी के मन में सालों से पल रही नफरत को प्यार में बदलने के लिए शायद एक पल का समय भी काफी होता है. ऐसा ही कुछ एक अमेरिकी शख्स के साथ भी हुआ, जिसे कभी इस्लाम के नाम से भी चिढ़ थी. मस्जिद में ब्लास्ट कर सैंकड़ों लोगों को मौत की नींद सुला देना चाहता था. लेकिन अचानक कुछ ऐसा हुआ कि ना सिर्फ मुसलमानों को लेकर उसने अपना मन बदल दिया बल्कि इस्लाम कबूल कर खुद मुसलमान बन गया.

ये कहानी है रिचर्ड मैकिनी की जिन पर हाल ही में बनी डॉक्युमेंट्री चर्चा में है. रिचर्ड ने 25 साल यूएस मरीन फोर्स में अपनी सेवाएं दी हैं. नौकरी के दौरान मैकिनी का कई खाड़ी देशों में भी जाना हुआ, जहां मैकिनी हमेशा मुस्लिम लोगों को घातक दुश्मनों के नजरिए से देखते थे.

इतना ही नहीं, जब वो अमेरिका के इंडियाना में अपने घर वापस लौटते तो भी उनकी नफरत खत्म नहीं होती थी. मैकिनी की नफरत इतनी ज्यादा बढ़ गई थी कि अगर लोकल स्टोर में कोई हिजाब पहने महिला मौजूद होती थी, तो मैकिनी

की पत्नी उनका रास्ता बदलवा देती थी. बाद में तो मैकिनी की नफरत का आलम ऐसा हो गया था कि पत्नी ने भी उनका साथ छोड़ दिया था.

मुस्लिमों को देखना भी मजबूरी लगती थी

डॉक्यूमेंट्री के लिए दिए इंटरव्यू में मैकिनी ने बताया गया कि इंडियाना के मुन्सी शहर में रहते हुए जब भी वे घर से बाहर जाते थे तो उन्हें मजबूरन मुस्लिम लोगों को देखना पड़ता था. मैकिनी को लगता था कि ये उनका देश और उनका शहर है, और यही सोच उन्हें उस पॉइंट तक ले गई, जब मैकिनी को लगने लगा कि अब इन लोगों को नुकसान पहुंचाना चाहिए.

नफरत की आग में जल रहे मैकिनी ने मस्जिद (इस्लामिक सेंटर) में ब्लास्ट करने का मन बनाया. मैकिनी ने साल 2009 में शुक्रवार के दिन धमाका करने का मन बनाया, क्योंकि उस दिन काफी संख्या में लोग मस्जिद के बाहर जमा होते थे.

ब्लास्ट में कम से कम 200 लोगों को मारना चाहते थे

रिचर्ड मैकिनी ने सोच रखा था कि उनके ब्लास्ट में कम से कम 200 लोग मारे जाएंगे और घायल होंगे. हालांकि, मैकिनी ने ऐसा कुछ नहीं किया और इसके पीछे जो कारण था, वो वाकई चौंकाने वाला था.

दरअसल, सब कुछ प्लान के तहत ही जा रहा था. जब मैकिनी मस्जिद के गेट से गुजर रहे थे तो अंदर बैठे कुछ लोगों ने उन्हें बुलाया और मुलाकात की. उस समय तक भी मैकिनी को लग रहा था कि ये सभी लोग हत्यारे हैं. मैकिनी को अंदर बुलाने वाले लोगों में अफगान रिफ्यूजी डॉक्टर साबिर बहरमी, उनकी पत्नी बीबी बहरमी और एक स्थानीय जोमो विलियम्स शामिल थे.

जुबान और व्यवहार ने मैकिनी को बदल दिया

हालांकि, गजब की बात यह हुई कि जैसा मैकिनी ने सोचा था, ऐसा कुछ नहीं हुआ. वे लोग मैकिनी के साथ एक खास मेहमान की तरह पेश आए. कुछ समय में ही मैकिनी को महसूस हो गया कि ये लोग वैसे नहीं हैं, जैसी उनके मन में सोच पैदा हो गई थी.

मैकिनी इस बारे में कहते हैं कि ये सभी लोग काफी सादे और खुश मिजाज थे. वे सभी अपनी जिंदगी से खुश थे और अमेरिकी होने पर भी. साथ ही वे सभी मैकिनी के साथ बात करना काफी पसंद कर रहे थे.

इस अनुभव ने मैकिनी की सोच बदली और इसके बाद वे अक्सर मस्जिद जाने लगे. करीब आठ सप्ताह बाद उन्होंने इस्लाम कबूल कर लिया. जिसके बाद वे मुन्सी में इस्लामिक सेंटर के दो साल अध्यक्ष भी रहे.

मैकिनी के जीवन पर बन चुकी है शॉर्ट फिल्म

रिचर्ड मैकिनी के जीवन पर आधारित एक शॉर्ट फिल्म 'Stranger at the Gate' भी बनाई जा चुकी है, जिसका डायरेक्शन जोशुआ सेफतेल ने किया है. बीते जून महीने में शॉर्ट फिल्म ने ट्रिबेका फिल्म फेस्टिवल में स्पेशल ज्यूरी मेंशन भी जीता था. अब 14 सितंबर से इस फिल्म को फ्री में यूट्यूब पर भी देखा जा सकता है.

जोशुआ ने पहले मैकिनी की लाइफ पर बने एपिसोड The Secret Life of Muslims का डायरेक्शन किया, जिसका प्रसारण सीबीएस संडे मॉर्निंग पर हुआ था. इस शो को लाखों लोगों ने देखा, जिसके बाद जोशुआ को लगा कि इस विचार को और ज्यादा गहराई से सभी के सामने लाना चाहिए.

फिल्म के दौरान जोशुआ मैकिनी के बारे में और ज्यादा जानना चाहते थे. साथ ही वह उन लोगों को लेकर भी जिज्ञासु था, जिन्होंने सबसे पहले मैकिनी को मस्जिद के अंदर बुलाया था और दयालुता दिखाई थी.

जोशुआ इस बारे में कहते हैं कि ये लोग ही इस स्टोरी के हीरो हैं. जोशुआ ने कहा था कि उस समय उन लोगों को अंदाजा था कि कुछ गलत है और यहां तक कि वे डरे हुए भी थे, लेकिन उसके बावजूद उन्होंने मैकिनी को गले लगाया. इन सबमें लोगों में एक जादुई शक्ति थी और ऐसा करना एक कला है जो आजकल गायब हो चुकी है.

मस्जिद उड़ाने के प्लान बनाने के 13 साल बाद मैकिनी आज भी मुस्लिम है. वे अब ना सिर्फ समाज सेवक बनकर काम कर रहे हैं, बल्कि अब एक एंटी हेट एक्टिविस्ट और स्पीकर भी बन गए हैं.

इस्लाम दुसमन डच संसद

ने इस्लाम कबुल किया

ऐसा आप ने सुना होगा

क्लावेरेन डच संसद के निचले सदन में बरसों से इस्लाम के खिलाफ झंडा बुलंद करते रहे

उर्दू का एक शेर है

काबे को मिलगये पासबाँ सनम कदों से

योराम फान क्लावेरेन दुनिया भर में इस्लाम विरोधी कामों के लिए जानी जाती PVV पार्टी का हिस्सा रहे हैं।

PVV पार्टी का हिस्सा रहे हैं। नीदरलैंड के सांसद योराम कुछ दिनों पहले तक इस्लाम को कोसा करते थे लेकिन अब उन्होंने इस्लान कबूल कर लिया है। NRC अखबार के मुताबिक क्लावेरेन की कही बात, 'इस्लाम झूठ है

और कुरान जहर' एक समय में काफी चर्चा में रही थी। इस्लाम कबूलने के बाद NRC अखबार से इंटरव्यू में योराम ने कहा, मैं अपनी उस टिप्पणी (इस्लाम झूठ है और कुरान जहर) पर शर्मिंदा हूं।

PVV पार्टी का हिस्सा रहे हैं। नीदरलैंड के सांसद योराम कुछ दिनों पहले तक इस्लाम को कोसा करते थे लेकिन अब उन्होंने इस्लान कबूल कर लिया है। NRC अखबार के मुताबिक क्लावेरेन की कही बात, 'इस्लाम झूठ है और कुरान जहर' एक समय में काफी चर्चा में रही थी। इस्लाम कबूलने के बाद NRC अखबार से इंटरव्यू में योराम ने कहा, मैं अपनी उस टिप्पणी (इस्लाम झूठ है और कुरान जहर) पर शर्मिंदा हूं।

इस्लाम को झूठ और क़ुरान को ज़हर बताने वाला डच सांसद बना मुसलमान

कभी इस्लाम को झूठ और क़ुरान को ज़हर बताने वाले डच सांसद योराम फान क्लावेरेन अब खुद मुसलमान बन गए हैं । योराम फान क्लावेरेन दुनिया भर में इस्लाम ...

एम्स्टर्डम: कभी इस्लाम को झूठ और क़ुरान को ज़हर बताने वाले डच सांसद योराम फान क्लावेरेन अब खुद मुसलमान बन गए हैं । योराम फान क्लावेरेन दुनिया भर में इस्लाम विरोधी कामों के लिए जानी जाती PVV पार्टी का हिस्सा रहे हैं। नीदरलैंड के सांसद योराम कुछ दिनों पहले तक इस्लाम को कोसा करते थे लेकिन अब उन्होंने इस्लान कबूल कर लिया है। NRC अखबार के मुताबिक क्लावेरेन की कही बात, 'इस्लाम झूठ है और कुरान जहर' एक समय में काफी चर्चा में रही थी। इस्लाम कबूलने के बाद NRC अखबार से इंटरव्यू में योराम ने कहा, मैं अपनी उस टिप्पणी (इस्लाम झूठ है और कुरान जहर) पर शर्मिंदा हूं।

उन्होंने कहा, ये बात पूरी तरह गलत है। साथ ही योराम ने ये भी कहा, 'ये PVV पार्टी की पॉलीसी थी, जो कुछ भी गलत था उसे किसी न किसी तरीके से इस्लाम से जोड़ा जाना था। अल्गेमीन डागब्लाड अखबार ने लिखा, क्लावेरेन एक समय में नीदरलैंड्स में बुर्का और मीनारों पर प्रतिबंध लगाने की वकालत किया करते थे। उनका कहा था, हमें नीदरलैंड्स में कोई इस्लाम नहीं चाहिए, और हो भी तो कम से कम। इस्लाम विरोधी टिप्पणियों के लिए दुनिया भर में सुर्खियों में रहने वाले क्लावेरेन एक इस्लाम विरोधी किताब 'From Christianity to Islam in the Time of Terror' के लिए रिसर्च कर रहे थे। किताब जारी होने से पहले ही उन्होंने पिछले साल 26 अक्टूबर को इस्लाम कबूल किया।

40 साल के डच राजनेता क्लावेरेन ने इस्लाम कबूलने पर बताया, मेरा मन बदल गया है।मुझे लंबे सयम से इसकी तलाश थी।ये मेरे लिए धार्मिक रूप से घर वापसी जैसा है। उन्होंने डच रेडियो से कहा, किताब लिखने के दौरान मैंने ऐसी-ऐसी चीज़ें जानीं, जिससे इस्लाम के प्रति मेरे पुराने विचार लड़खड़ा गए। इस्लाम कबूलने के बाद एक इंटरव्यू में क्लावेरेन ने कहा, अगर आप मानते हैं भगवान सिर्फ एक है और मोहम्मद उसके पैगंबर थे, जैसे ईसा मसीह और मोजे, तो आप औपचारिक रूप से मुसलमान हैं। क्लावेरेन ने कहा, धर्म बदलने पर उनकी पत्नी को कोई परेशानी नहीं है. मेरी पत्नी इस बात को स्वीकार करती है कि मैं मुसलमान हूं। उसने कहा कि अगर तुम खुश हो तो मैं तुम्हें नहीं रोकूंगी।

बता दें कि क्लावेरेन, विल्डर्स की पार्टी PVV से 2014 में अलग हो गए थे। उसके बाद उन्होंने नीदरलैंड्स के लिए अपनी अलग पार्टी शुरू की थी । 2017 के नेशनल इलेक्शन में वे सीट जीतने में कामयाब नहीं हो पाए तो उसके बाद वह राजनीति से अलग हो गए। क्लावेरेन डच संसद के निचले सदन में बरसों से

इस्लाम के खिलाफ झंडा बुलंद करते रहे।दिन रात इस्लाम की आलोचना करने वाले फान क्लावेरेन अब कहते हैं वह गलत थे । योराम मजहब बदलने वाले दूसरे पूर्व PVV पॉलीटीशियन हैं। उल्लेखनीय है कि नीदरलैंड्स की आबादी 1.7 करोड़ है जिसमें लगभग पांच फीसदी मुसलमान हैं। उनकी तादाद 8.5 लाख के करीब हैं।

ब्लेयर की साली ने इस्लाम कबूल किया

25.10.2010२५ अक्टूबर २०१०

ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर की साली ने धर्म परिवर्तन कर इस्लाम कबूल कर लिया है. चेरी ब्लेयर की बहन लौरेन बूथ ने बीते सप्ताह

इस्लाम कबूल करने की घोषणा की. बूथ पेशे से पत्रकार और मानवाधिकार कार्यकर्ता हैं.

ब्लेयर की साली ने इस्लाम कबूल किया

25.10.2010२५ अक्टूबर २०१०

<u>ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर की साली ने धर्म परिवर्तन कर इस्लाम कबूल कर लिया है. चेरी ब्लेयर की बहन लौरेन बूथ ने बीते सप्ताह इस्लाम कबूल करने की घोषणा की. बूथ पेशे से पत्रकार और मानवाधिकार कार्यकर्ता हैं.</u>

मीडिया रिपोर्टों के अनुसार 43 साल की बूथ ने इस्लाम कबूल करने की बात लंदन में बीते सप्ताह सामाजिक संगठन ग्लोबल पीस एंड यूनिटी 2010 के बैनर तले हुए एक कार्यक्रम में उजागर की. कई इस्लामिक कट्टरपंथी नेताओं की मौजूदगी में बूथ ने बताया कि उन्होंने यह फैसला उन लोगों की धारणा बदलने के लिए किया है जो इस्लाम को आतंकवाद फैलाने वाला मानते हैं.

जन्म से कैथोलिक बूथ कई साल तक ईरान के अंग्रेजी न्यूज चैनल प्रेस टीवी के लिए काम कर चुकी है. उन्होंने बताया कि ईरान में छह सप्ताह पहले एक दरगाह पर इस्लाम की ओर बरबस खींचने वाला अनुभव महसूस किया जिसकी वजह से वह इस्लाम को कबूल करने से खुद को रोक नहीं पाई. तभी से बूथ रोजाना पांच वक्त की नमाज पढ़ती हैं और कभी कभी मस्जिद भी जाती हैं.

बूथ कहती हैं ..मुझे मालूम है कि मेरे इस फैसले से विवाद पैदा हो सकता है लेकिन इससे बेपरवाह मैं कुरान पढ़ती हूं और घर से बाहर निकलने पर सिर तक हिजाब भी पहनती हूं. वह कहती हैं कि पिछले 45 दिन से एल्कोहल को भी हाथ नहीं लगाया.

कैथोलिक मूल की चेरी ब्लेयर और 2007 में चर्च ऑफ इंग्लैंड छोड़कर रोमन कैथोलिक बन चुके टोनी ब्लेयर की ओर से फिलहाल इस बारे में कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है. पिछले महीने ही बूथ ने ब्लेयर पर इस्लाम के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रसित होने का आरोप लगाते हुए कहा था कि वह इज़्राएल फलस्तीन मामले में सही ढंग से मध्यस्थता नहीं कर सकते. वह इराक पर 2003 में

अमेरिकी हमले में ब्रिटेन के शामिल होने का विरोध कर इस फैसले के लिए ब्लेयर की आलोचना भी कर चुकी हैं.

रिपोर्टः एजेंसियां निर्मल

संपादनः उज्ज्वल भट्टाचार्य

दुनिया की वह मशहूर हस्तियां जिन्होने इस्लाम कबुल कर लिया

Sonny Bill Williams

Malcolm X

Hussein Ye

Pierre Vogel

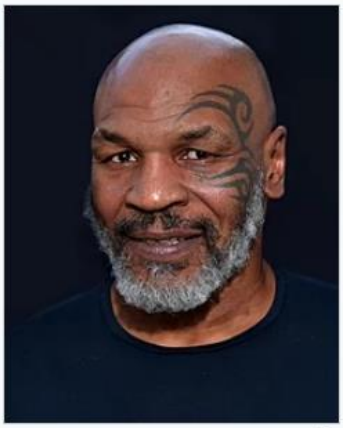

Mike Tyson

Joram van Klaveren

अफगानिस्तान: तालिबान के सामने अमेरिकी नागरिक ने कबूल किया इस्लाम

अफगानिस्तान: तालिबान के सामने अमेरिकी नागरिक ने कबूल किया इस्लाम

जबीहुल्लाह मुजाहिद ने आधिकारिक तौर पर अनिवार्य शाहदा (इस्लाम में दीक्षा की प्रार्थना) का पाठ करके अमेरिकी नागरिक का धर्मांतरण कर दिया (अफगान मिडिया)जबीहुल्लाह मुजाहिद ने आधिकारिक तौर पर अनिवार्य शाहदा (इस्लाम

में दीक्षा की प्रार्थना) का पाठ करके अमेरिकी नागरिक का धर्मांतरण कर दिया (अफगान मिडिया)

American Citizen Converted to Islam: अमेरिकी नागरिक का नाम क्रिस्टोफर है. इस्लाम कबूल करने के बाद अब उन्हें मोहम्मद ईसा का नाम दिया गया है. ईसा ने बताया कहा कि वो कई वर्षों से अफगानिस्तान में रह रहे हैं. उनका कहना है कि वो तालिबान की नैतिकता से प्रेरित थे, इसलिए उन्होंने इस्लाम अपनाया है.

अधिक पढ़ें ...

काबुल. अफगानिस्तान (Afghanistan Crisis) में तालिबान शासन (Taliban Rule in Afghanistan) को मान्यता देने के लिए दुनियाभर में बहस छिड़ी है. इस बीच एक अमेरिकी नागरिक ने तालिबान की तारीफ करते हुए इस्लाम कबूल कर लिया है. अफगानिस्तान की सरकारी समाचार एजेंसी ने ऐसा दावा किया है और इसकी एक तस्वीर भी शेयर की है. अफगान मीडिया ने बताया कि अफगानिस्तान में एक अमेरिकी नागरिक ने तालिबान के प्रवक्ता जबीहुल्ला मुजाहिद की मौजूदगी में इस्लाम धर्म अपना लिया है.

द ट्रिब्यून यूके की रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिकी नागरिक का नाम क्रिस्टोफर है. इस्लाम कबूल करने के बाद अब उन्हें मोहम्मद ईसा का नाम दिया गया है. ईसा ने बताया कहा कि वो कई वर्षों से अफगानिस्तान में रह रहे हैं. उनका कहना है कि वो तालिबान की नैतिकता से प्रेरित थे, इसलिए उन्होंने इस्लाम अपनाया है.

जबीहुल्लाह मुजाहिद ने आधिकारिक तौर पर अनिवार्य शाहदा (इस्लाम में दीक्षा की प्रार्थना) का पाठ करके अमेरिकी नागरिक का धर्मांतरण कर दिया और उसे मोहम्मद ईसा नाम दिया. आंसू भरी आंखों से ही क्रिस्टोफर ने अपने नए नाम को दीक्षा के वक्त दोहराया. तालिबान के प्रवक्ता ने इस धर्म परिवर्तन का स्वागत किया और ईसा को गले लगाया.

बता दें कि तालिबान ने 15 अगस्त को पूरे अफगानिस्तान पर कब्जा कर लिया था. उसके बाद से देश में महिलाओं, बच्चों और आम नागरिकों का बुरा हाल है. ये देश आर्थिक तंगी से जूझ रहा है. हालात ऐसे हो गए हैं कि कम से कम आधी आबादी भुखमरी की कगार पर है.

तालिबान की कैद में रहे टिमोथी वीक्स वापस ही नहीं जाना चाहते हैं अफगानिस्तान बल्कि अपने देश ऑस्ट्रेलिया में भी शरणार्थियों के लिए लड़ रहे हैं

अफगानिस्तान में तालिबान की कैद में रहे ऑस्ट्रेलिया के नागरिक टिमोथी वीक्स अब वापस अफगानिस्तान लौटना चाहते हैं। परन्तु उनका नाम अब टिमोथी वीक्स नहीं बल्कि जिब्राइल उमर है, जो उन्होंने इस्लाम अपनाने के बाद रखा है। उन्होंने तालिबान की कैद में रहने के दौरान ही इस्लाम अपना लिया था। एक वेबसाईट के अनुसार वह स्वयं को अब टिमोथी वीक्स न कहलवाकर "जिब्राइल उमर" ही कहलवाना पसंद करते हैं।

जब टीआरटी वर्ल्डवाइड ने उनसे साक्षात्कार के लिए संपर्क किया तो उन्होंने कहा कि "कृपया मुझे जिब्राइल कहें"। टिमोथी वीक्स का अपहरण तालिबानियों के लिए एक गैंग ने किया था, वह अंग्रेजी पढ़ाया करते थे। और वह एक समर्पित ईसाई थे, जो एक शिक्षक के रूप में पिछड़े और पीड़ित लोगों के लिए कुछ करना चाहते थे। परन्तु जब उन्हें तालिबान ने वर्ष 2016 में कैद कर लिया तो वह तालिबान के लड़ाकों के "मजहब के प्रति समर्पण" से बहुत प्रभावित हुए। उन्हें सेवा के बदले एके 47 से घिरे हुए लोग मिले थे, पर वह अब इसे "अल्लाह की मर्जी" बताते हैं।

तालिबान की कैद में रहते हुए करना पड़ा काम

टिमोथी वीक्स को अफगानिस्तान में तालिबान की कैद में रहते हुए बहुत काम करना पड़ा था। क्योंकि अमेरिका की तरह ऑस्ट्रेलिया की भी यह नीति नहीं है कि वह रिहाई के लिए रकम दे, इसलिए उनकी कैद

की अवधि बढ़ती ही चली गयी। उनका कहना है कि उन्हें जंजीरों में जकड़कर मारा जाता था, और जैसे ही अमेरिकी सेना कुछ भी नुकसान करती थी, तो तालिबान उसका बदला उन्हें प्रताड़ित करके लेते थे।

बीबीसी के अनुसार उनका कहना है कि उन्हें फर्श को साफ़ रखना पड़ता था और ठंडे पानी से तालिबान के कपड़ों को भी धोना पड़ता था, अगर ठीक से सफाई नहीं होती थी, तो उन्हें पीटा जाता था।

इस्लाम क्यों अपनाया?

बीबीसी के अनुसार जिब्राइल उमर अर्थात टिमोथी वीक्स ने बताया कि जब तालिबान की ओर से प्रताड़ना कम हुई तो उन्होंने पढने के लिए कुछ किताबें माँगी और उन्होंने उन्हें उर्दू बाजार कराची से प्रकाशित कुरआन की अंग्रेजी और उर्दू की प्रतियाँ लाकर दीं।

फिर वह कहते हैं कि "इन किताबों और क़ुरान को पढ़ने के बाद, मैं धीरे-धीरे इस्लाम की ओर आकर्षित होने लगा। आख़िरकार 5 मई, 2018 को मैंने इस्लाम धर्म अपना लिया और वुज़ू और नमाज़ की प्रेक्टिस शुरू कर दी।"

तालिबान को पसंद नहीं आया था:

वह कहते हैं कि जब तालिबान को पता चला कि उन्होंने इस्लाम अपना लिया है तो वह बहुत गुस्सा हुए थे और खुश होने के स्थान पर उन्हें मारने की धमकी देना शुरू कर दिया था।

वह यह कहते हैं कि उन्होंने ऊपर वाले का शुक्रिया अदा करने के लिए इस्लाम अपनाया! तो क्या वह ईसाई रहते हुए ऊपर वाले का शुक्रिया अदा नहीं कर सकते थे? इस पर उन्होंनें कहा कि वह तालिबानियों के मजहब के प्रति समर्पण से बहुत प्रभावित हुए थे, और उनके जैसा मजहब के प्रति समर्पण पश्चिमी जगत में नहीं दिखता!

परन्तु प्रश्न यह उठता है कि इस्लाम अपनाना तो ठीक है, परन्तु अपने ही देश के विरुद्ध खड़े हो जाना यह कितना ठीक है और क्या इस्लाम अपनाने का अर्थ अपने ही देश के नागरिकों की सुरक्षा केलिए बनाई गयी नीतियों का विरोध करना है? भारत में भी नागरिकता आन्दोलन के दौरान यही देखा गया था कि मजहब के नाम पर लोग अपने ही देश को सुरक्षित करने वाली नीति के विरोध में चले गए थे!

इससे पहले ब्रिटिश पत्रकार युवान रिडले भी तालिबान की कैद के बाद इस्लाम अपना चुकी हैं। और टिमोथी वीक्स की तरह इस्लाम का प्रचार कर रही हैं। गार्डियन की एक रिपोर्ट के अनुसार उन्होंने बात करते हुए कहा कि **मुझे केरल में दस हजार लोगों ने सुना था।** वह खुद को मोटिवेशनल स्पीकर बताती हैं और वह मुस्लिमों के विश्वास पर बात करती हैं और कहती हैं कि आतंक के युद्ध पर हमला करना चाहिए, जो दरअसल इस्लाम के खिलाफ एक युद्ध है और वह मुस्लिम जगत के साथ हैं।

युवान को बाइबिल में हमेशा ही महिलाओं के चित्रण को लेकर समस्या रहती थी, और वह कुरआन में महिलाओं को दिए गए आदर से बहुत प्रभावित हुईं थीं और उनका कहना है कि इस्लाम महिलाओं को बहुत आदर और अधिकार देता है, परन्तु महिलाओं को यह नहीं पता है।

अब वह इस्लाम के प्रचार प्रसार के लिए काम करती हैं। वह तालिबान को ब्रिटिश सैनिकों से बेहतर बता चुकी हैं, जिनकी कैद में वह रही थीं!

इसी प्रकार टिमोथी वीक्स भी ऑस्ट्रेलिया की कथित माइग्रेशन नीतियों का विरोध कर रहे हैं, और इतना ही नहीं टिमोथी वीक्स अनस हक्कानी को भला इंसान मानते हैं और हिन्दुओं के दुश्मन अनस हक्कानी को केवल युद्ध का कैदी मानते हैं। पाठकों को स्मरण होगा कि अनस हक्कानी भारत पर सत्रह बार आक्रमण करने वाले महमूद गजनवी की कब्र पर पहुंचा था और उसने सोमनाथ मंदिर तोड़ने का भी उल्लेख किया था।

Yvonne Ridley) ब्रिटिश पत्रकार हैं, जो अब मरियम रिडले[2]के नाम से भी जानी जाती हैं। 2001 में तालिबान ने पकड़ कर **10 दिन बंदी** बना कर रखा था। बाद में इसाई धर्म से इस्लाम धर्म[3]अपना लिया। वह फिलिस्तीन की समर्थक हैं।

इन द हैंड्स ऑफ द तालिबान

जन्म: 23 अप्रैल 1958, युवान रिडले (या योवोन रिडले) संडे ऐक्सप्रैस की चीफ़ रिपोर्टर रहने के इलावा संडे टाइम, ऑब्ज़र्वर, दैनिक मिरर और इंडीपेंडनट आफ़ संडे के लिए भी काम करती रही हैं। सी एन एन, बी-बी सी, आई टी एन और कार्लटन टीवी के लिए भी ख़िदमात अंजाम दीं। इसके लिए इराक़, अफ़ग़ानिस्तान[4] और फ़लस्तीन का दौरा किया। रिडले महिलाओं के अधिकार के लिए भी आवाज़ उठाती रहती हैं।

पुस्तकें:[संपादित करें]

इन दी हैंड्स ऑफ तालिबान[5] (तालिबान के साथ उनके अनुभवों पर

यवोन रिडले

यवोन रिडले (जन्म २३ अप्रैल १९५८) एक ब्रिटिश पत्रकार हैं, जो अब समाप्त हो चुकी रेस्पेक्ट पार्टी की राष्ट्रीय परिषद के अध्यक्ष थे । उसे 2001 में तालिबान ने पकड़ लिया था । बाद में उसने इस्लाम धर्म अपना लिया । वह फिलिस्तीन की

मुखर समर्थक हैं, [२] जिसे उन्होंने एक स्कूली छात्रा के रूप में अपनाया। वह आतंकवाद के खिलाफ युद्ध में ज़ायोनीवाद और पश्चिमी मीडिया चित्रण और विदेश नीति की एक उत्साही आलोचक हैं , और उन्होंने पूरे मुस्लिम दुनिया के साथ-साथ अमेरिका, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया में बोलने वाले दौरे किए हैं । [३] पत्रकार द्वारा उन्हें "इस्लामिक दुनिया में एक सेलिब्रिटी के करीब कुछ" कहा गया हैराचेल कुक , और 2008 में इस्लाम ऑनलाइन द्वारा "इस्लामिक दुनिया में सबसे अधिक पहचानी जाने वाली महिला" को वोट दिया गया था। [३]

रिडले का जन्म स्टेनली, काउंटी डरहम के मजदूर वर्ग के खनन शहर में हुआ था , जो तीन लड़कियों में सबसे छोटी थी, [१] और उनकी परवरिश चर्च ऑफ इंग्लैंड में हुई थी । [४] उन्होंने अपने करियर की शुरुआत स्थानीय स्टेनली न्यूज से की, [1] जो डरहम विज्ञापनदाता श्रृंखला का हिस्सा था। वहां से वह न्यूकैसल अपॉन टाइन [3] चली गईं और थॉमसन क्षेत्रीय समाचार पत्रों के लिए द संडे सन और न्यूकैसल जर्नल के साथ-साथ द नॉर्दर्न इको के लिए काम किया जो वेस्टमिंस्टर प्रेस समूह का हिस्सा था। उन्होंने लंदन कॉलेज ऑफ प्रिंटिंग में पढ़ाई की । एक पत्रकार के रूप में, उन्हें द संडे टाइम्स , द इंडिपेंडेंट ऑन संडे , द ऑब्जर्वर , द डेली मिरर और द न्यूज ऑफ द वर्ल्ड द्वारा नियोजित किया गया था । [५] वे रविवार को वेल्स की उप संपादक और कार्यवाहक संपादक थीं, और जब संडे एक्सप्रेस ने उन्हें ९/ ११ के बाद अफगानिस्तान भेजा था तब वे मुख्य संवाददाता थीं । [6] एक साक्षात्कार में उसने होने का उल्लेख है " 'के रूप में ख्याति पैट्सी स्टोन की फ्लीट स्ट्रीट कि वह खुश था'" के पीछे करने के लिए उसे रूपांतरण के साथ छोड़ दिया है करने के लिए इस्लाम । [३] वामपंथी , साम्राज्यवाद विरोधी कारणों के लिए उनका जुनून उनके धर्मांतरण से पहले का था; [३] [७] मार्च २००३ में इराक पर आक्रमण करने के फैसले पर इस्तीफा देने से पहले वह एक किशोरी के रूप में लेबर पार्टी में शामिल हो गईं । [३]

तालिबान द्वारा कब्जा

यवोन रिडले को तालिबान ने 28 सितंबर 2001 को अफगानिस्तान में कब्जा कर लिया था , और रविवार एक्सप्रेस के लिए काम करते हुए 11 दिनों के लिए आयोजित किया गया था । [८] अफगानिस्तान पर अमेरिका के नेतृत्व वाले आक्रमण की शुरुआत से पहले के दिनों में , प्रवेश वीजा से इनकार करने के बाद, उसने बीबीसी संवाददाता जॉन सिम्पसन के उदाहरण का अनुसरण करने का फैसला किया , जिसने गुमनाम रूप से बुर्का में सीमा पार की थी । [९]

उसने 26 सितंबर को प्रवेश किया, और अफगानिस्तान में दो दिन अंडरकवर बिताए। जब वह अपने गाइडों के साथ यात्रा कर रही थी, तब उसकी खोज की गई थी, जब वह गधे पर सवार थी और उसका कैमरा तालिबान के एक सैनिक ने देखा था। [८] उस पर एक जासूस होने का आरोप लगाया गया, जिसने मौत की सजा दी, और कम से कम अफगानिस्तान में अवैध रूप से प्रवेश करने के लिए जेल का सामना करना पड़ा। [१०]

एक्सप्रेस समाचार पत्रों के प्रकाशक रिचर्ड डेसमंड ने पाकिस्तान के इस्लामाबाद में अफगान दूतावास में तालिबान अधिकारियों के साथ सीधे बात करने के लिए एक वार्ताकार दल भेजा। यह जल्द ही स्पष्ट हो गया कि शासन को न तो धन चाहिए और न ही सहायता बल्कि इस बात का प्रमाण चाहिए कि रिडले एक प्रामाणिक पत्रकार थे। ब्रिटिश उच्चायुक्त पाकिस्तान , हिलैरी सीनोट , में अफगान राजदूत से मुलाकात इस्लामाबाद , मुल्ला अब्दुल सलाम ज़ाईफ , और उसकी रिहाई के लिए कहा। [११] ८ अक्टूबर को उसकी रिहाई के बाद,

रिडले को सीमा पर ले जाया गया, जहां उसे पाकिस्तानी अधिकारियों को सौंप दिया गया। [१२] यह आशंका थी कि पिछले दिन शुरू हुए अफगानिस्तान में युद्ध के हिस्से के रूप में अफगान लक्ष्यों पर बमबारी से यह खतरे में पड़ जाएगा। [13]

रिडले ने खुलासा किया कि उसने एक टूथपेस्ट ट्यूब के लिए एक बॉक्स के अंदर और एक साबुन के आवरण के अंदर एक छिपी हुई डायरी रखी थी। वह कैद के दौरान भूख हड़ताल पर रही थी और उसने अपने अनुभव को भयानक बताया लेकिन उसे शारीरिक रूप से चोट नहीं आई। यह पता चला कि पूछताछ के दौरान उसने अपनी पहचान स्थापित करने के लिए अपने बंधकों का अपमान किया था। [8] [14]

उनकी रिहाई के बाद, उनके गाइड जान अली और नगीबुल्लाह मुहमंद, साथ ही उनकी पांच वर्षीय बेटी बसमेना को काबुल की जेल में रखा गया था। तालिबान द्वारा उसके कैमरे में फिल्म विकसित करने के बाद मुहमंद के कम से कम तीन रिश्तेदारों को भी रिडले की सहायता करने के लिए गिरफ्तार किया गया था। बाद में सभी को बिना किसी आरोप या नुकसान के रिहा कर दिया गया। [१५] [१६] रिडले ने कई सार्वजनिक दलीलें दी थीं, जिनमें से एक बीबीसी की पश्तो और फ़ारसी सेवा के माध्यम से थी, जिसमें तालिबान से कैदियों को उसी मानवीय आधार पर रिहा करने का आग्रह किया गया था, जो शासन ने उसे दिखाया था। उसने कहा कि बाद में वह सावधान थी कि पुरुषों को सीधे अपने मार्गदर्शक के रूप में संदर्भित न करें क्योंकि वे पहले से ही कब्जा करने की स्थिति में किसी भी तरह की भागीदारी को स्वीकार नहीं करने के लिए सहमत थे।

इस्लाम में धर्मांतरण

उसने अपनी पुस्तक, इन द हैंड्स ऑफ द तालिबान में कहा है कि, जब वह कैद में थी, तालिबान के लोगों द्वारा उसके साथ सम्मान के साथ व्यवहार किया गया था और बाद में, उनके शिष्टाचार से चकित था। उसके संपर्क में आने वाले सभी पुरुषों ने (उसके लिए)